

पानि पुं. (तद्.) 1. हाथ, कर 2. पानी 3. आब, चमक दे. पानी।

पानिक पुं. (तत्.) 1. शराब बेचने वाला, (मद्य-विक्रेता) 2. कलवार (कलार)।

पानिप पुं. (देश.) कांति, आब, चमक, द्युति, ओप, लावण्य उदा. "पानिय के कारन सँभाराति न गात"।

पानिय पुं. (तद्.) दे. पानी।

पानी पुं. (तद्.) 1. प्रसिद्ध द्रव जो पारदर्शी, निर्गन्ध और स्वाद विशेष रहित होता है, जीवधारियों के लिए अनिवार्य, पदार्थ (मानव-शरीर में पिचहत्तर प्रतिशत पानी होता है) यह नदी, कूप, जलाशय, बादलों से प्राप्त होता है, इसके विविध रूप हैं, भाप, मेघ, ओला, बूँद, कोहरा, पाला, ओस, बर्फ, पंचमहाभूतों में से एक तत्व, पानी का दूसरा अर्थ जल है तथा 'जीवन' भी मुहा. पानी आना-रिस-रिस कर पानी एकत्र होना, कुँएँ या झरने में पानी का सोता खुलना, नल में पानी का प्रवाह प्रारंभ होना, घाव या नाक में पानी भर आना; पानी उठाना- पानी के तल या सतह का नीचा हो जाना, पानी घटना; पानी काटना- पानी का बाँध काटना, एक नाली से दूसरी नाली में पानी ले जाना, तैरते समय हाथ से पानी हटाना, पानी चीरना; पानी का बुलबुला होना- क्षण भंगुर, बुलबुले की तरह नष्ट हो जाना या रूपांतरित हो जाना; पानी-पानी हो जाना- शरमा जाना, लज्जा का भाव, लज्जित हो जाना, प्रगट होना; पानी की तरह बहाना- अंधाधुंध खर्च करना, धन उड़ाना, लुटाना; पानी के मोल- पानी की तरह सस्ता, कौड़ियों के भाव या मोल, पानी चढ़ना- पानी का ऊँचाई की ओर जाना जैसे- छत पर रखी टंकी पर पानी न पहुँचना या चढ़ाना, पानी बढ़ना, सींचे जाने वाले खेतों में पानी न पहुँचना, सींचा जाना (कृषि के संदर्भ में); पानी-चढ़ाना- पानी को ऊँचाई पर ले जाना, पानी को गरम होने या अन्य कार्य से चूल्हे पर रखना, चाय का पानी चढ़ाना, दाल का पानी चढ़ाना, ऊदहन देना, सिंचाई के लिए खेत तक ले जाना, सींचना; पानी छालना- हिंदुओं में शीतला (चेचक)

रोग होने पर किया जाने वाला विशेष उपचारपरक कृत्य; पानी छूटना- रिस-रिस कर पानी निकलना, रिसना; पानी-छोड़ना- किसी चीज का रिसना जैसे- तरकारी को आग पर चढ़ाने पर उसका पानी निकलना या छोड़ना; पानी टूटना- कुँएँ या तालाब में पानी का इतना कम होना कि पानी निकाला जाना संभव न हो; पानी दिखाना- जानवरों को पानी पिलाने के लिए उनके सामने पानी का पात्र रखना या उन्हें जलाशय तक पानी पिलाने ले जाना, पशुओं को पानी पिलाना; पानी देना- सींचना, पानी से तर करना; पितरों के नाम तर्पण करना; पानी तक न माँगना- चटपट मृत्यु हो जाना, प्राणांत हो जाना; पानी-पानी करना- लज्जित कर देना; पानी पीकर जाति पूछना- काम होने के बाद उसके औचित्य की विवेचना करना; पानी पी- पी कर- निरंतर, अविराम, लगातार, हर समय; पानी फिरना/फिर जाना- चौपट होना, बरबाद होना, नष्ट होना, मिट्टी में मिलना; पानी फेरना/ फेर देना- परिश्रम विफल होना, बनी-बनाई बात बिगड़ जाना, मिटा देना; पानी भरना- सेवा या चाकरी करना, अधीन होना, तुलना में तुच्छ साबित होना उदा. उनके घर पर बड़े-बड़े पानी भरते हैं, पानी में आग लगाना- असंभव को संभव करना, असंभव झगड़ा या बखेड़ा खड़ा करना; पानी लगना- पानी इकट्ठा होना, पानी की ठंडक से दाँतों में टीस होना, पानी का स्पर्श दाँतों के लिए असह्य होना, स्थान विशेष की परिस्थिति से बुरी वासनाएँ उत्पन्न होना, स्थान विशेष के गुण से; शरारत सूझना- जैसे इसे मुंबई का पानी लग गया है; पानी से पतला- अत्यंत तुच्छ, दीन, अदना, जिसका कोई महत्व या सम्मान न हो; मीठा पानी- पेय जल, पीने में जो पानी खारा न लगे; मुँह में पानी आना- छूटना-चखने को जीभ का लालायित होना, व्याकुल होना, स्वाद चखने का गहरा लालच होना, गहरा लोभ होना, लालच के मारे रहा न जाना, तेल, घी, चर्बी के अतिरिक्त द्रव पदार्थ, पानी जैसी पतली कोई चीज नहीं-पाचन के लिए उत्तम पानी-नारियल, केले तथा अन्य फलों का